मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता के लिए मंत्र
बाह्म–मुहूर्त में पढ़ने योग्य मंत्र।

01. **ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे,**
प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं,
प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।।

अर्थ – हे स्त्री–पुरुषों! जैसे हम विद्वान् उपदेशक लोग प्रभात–वेला में स्वप्रकाश–स्वरूप, परमैश्वर्य के दाता और परमैश्वर्ययुक्त,प्राण–उदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान, सूर्य–चन्द्र को जिसने उत्पन्न किया है उस परमात्मा की स्तुति करते हैं और भजनीय, सेवनीय, ऐश्वर्ययुक्त, पुष्टिकर्त्ता, अपने उपासक, वेद और ब्रह्माण्ड के पालन करनेवाले, अन्तर्यामी, प्रेरक और पापियों को रुलानेवाले और सर्वरोगनाशक जगदीश्वर की स्तुति–प्रार्थना करतें है, वैसे तुम लोग भी किया करो।

02. **ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम,**
वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्,
राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।

अर्थ – जयशील, ऐश्वर्य के दाता, तेजस्वी,अन्तरिक्ष के पुत्ररुप सूर्य की उत्पति करनेवाले और जो कि सूर्यादि लोकों का विशेषकर धारण करनेवाले, सब ओर से धारणकर्त्ता, सब कुछ जाननेवाला, दुष्टों को दण्डदाता और सबका प्रकाशक है – जिस भजनीय स्वरूप को इस प्रकार सेवन करता हूँ और इसी प्रकार भगवान् परमेश्वर सबको उपदेश करता है कि तुम "जो मैं सूर्यादि जगत् को बनाने और धारण करने वाला हूँ', उस मेरी उपासना किया करो और आज्ञा में चला करो इससे हम लोग उसकी स्तुति करतें है।

03. **ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो,**
भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै–
र्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

अर्थ – हे भजनीय स्वरुप! सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक, ऐश्वर्यप्रद, सत्यधन को देनवाले, सत्याचरण करनेवालों के ऐश्वर्यदाता! हमें प्रज्ञा दीजिए। आप गाय, घोड़े आदि उत्तम पशुओं के योग से राज्यश्री को हमारे लिए प्रकट कीजिए। आपकी कृपा से हम लोग उत्तम मनुष्यों के सहयोग से बहुत की भाँति अच्छे बनें।

04. ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत,
प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उत्तेदिता मघन्तसूर्यस्य,
वयं देवानां सुमतौ स्याम।।

अर्थ – हे भगवन्! आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम लोग इस समय उन्नति तथा उत्तमता की प्राप्ति में प्रयत्नशील है ताकि हम ऐश्वर्ययुक्त और शक्तिमान् होवे। और हे परम पूज्य, असंख्य धन देनेवाले उत्तम प्रज्ञा और सुमति में हम सदा प्रवृत्त रहें।

05. ओं भग एव भगवाँ अस्तु देवा–
स्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति,
स नो भग पुर एता भवेह।।

अर्थ – हे सकलैश्वर्यसम्पन्न जगदीश्वर! आपकी सब सज्जन निश्चय करके प्रशंसा करते हैं सो आप, हे ऐश्वर्यप्रद! इस संसार और गृहस्थाश्रम में अग्रगामी और आगे–आगे सत्य कर्मों में बढ़ानेवाले होइये और जिसमे सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे पूजनीय देव होवें, उसी हेतु से हम विद्वान लोग सकलैश्वर्यसम्पन्न होके सब संसार के उपकार में तन, मन,धन से प्रवृत होवें।

06. ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थ – जो दिव्यगुणोंवाला मन जागते तथा सोते समय दूर–दूर चला जाता है, जो दूर जाने वाला, ज्योतियों का प्रकाशक ज्योति है, वह मेरा मन अच्छे विचारों वाला होवे।

07. ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो,
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।।

अर्थ – जिस मन द्वारा मननशील मनुष्य यज्ञ आदि में वैदिक तथा अन्य कर्तव्य – कर्म करते हैं तथा युद्धों के अन्दर धीर और गंभीर नेता लोग विचार – विमर्श करते हैं, जो अपूर्व शक्ति वाला, पूजनीय लोगों के अन्तःकरण में है, वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।

08. ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च,
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म कियते,
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थ – जिस मन के अंदर ज्ञान शक्ति, चिंतन शक्ति, धैर्य शक्ति रहती है, जो मन प्रजाओं में अमृतमय और तेजोमय है, जो इतना शक्तिशाली है कि इसके बिना मनुष्य कोई भी कर्म नहीं कर सकता – सब कर्म इसी की सहायता किये जाते हैं – वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

09. **ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्**
परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता,
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थ – भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल में जो कुछ होता है, वह इसी मन द्वारा ग्रहण किया जाता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियों और अंहकार तथा बुद्धि द्वारा जो यह जीवन – यज्ञ चल रहा है, इसका तथा मन, बुद्धि और कार्यकारी इन्द्रियों का जो अधिष्ठाता है, वह मेरा मन सदा शुभ संकल्प वाला बने और कदापि अशुभ संकल्प न करे।

10. **ओं यस्मिन्नृचः साम यजूँषि,**
यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चितंसर्व मोतं प्रजानां,
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थ – जिस मन में सम्पूर्ण वेद और सब शास्त्र तथा अन्य सब ज्ञान ओतप्रोत (भरा) रहता है, जिस मन की शक्ति ऐसी है कि जिसमें यह सब ज्ञान रह सके, सब बुद्धिमान् लोग इसी से मनन करतें है वह शक्तिशाली मेरा मन शुभ विचारों से युक्त हो।।

11. **ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्**
नेनीयतेऽभीशुभिवाजिन इव।
हत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं,
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थ – जैसे अच्छा सारथि घोड़ों को लगाकर नियम में रखता है, उसी प्रकार वश में किया हुआ यह मन मनुष्यों को अभीष्ट स्थान पर ले जाता है। जो मन हृदयस्थ है, जो कभी बूढ़ा नहीं होता, जो सबसे तीव्र वेग वाला है, वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।।

ऋग्वेद का अंतिम सूक्त

सत्संग के उपरान्त निम्नलिखित ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के चार मंत्रो का सम्मिलित पाठ होना चाहिए।

12. **ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।**
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

अर्थ – हे बलवान् और श्रेष्ठ तेजस्वी ईश्वर! सब पदार्थो को निश्चय से एकत्र करके सम्मिलित करते हो और भूमि अथवा वाणी के स्थान में उत्तम प्रकार से प्रकाशित हो। इसलिए वह तुम हम सबके लिए सब प्रकार से निवास, साधन, धन प्राप्त कराओ।

13. **ओं संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।।

अर्थ – हे भक्तों! तुम सब एक होकर प्रगति करो, एक दूसरे से मिलकर अच्छी प्रकार बोलो, तुम्हारा मन उत्तम संस्कारों से युक्त हो तथा पूर्वकालीन उत्तम ज्ञानी और व्यवहार चतुर लोग जिस प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करते आए हैं, उसी प्रकार तुम भी अपना कर्तव्य करते जाओ।

14. **ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।**
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

अर्थ – तुम सबका विचार एक हो, तम्हारी सभा एक जैसी हो, तुम सबके मन एक विचार से युक्त हों, इन सबका चित्त भी सबके साथ ही हो, तुम सबको एक ही विचार से युक्त करता हूँ और तुम सबको एक प्रकार के भोज्य पदार्थ देता हूँ।

15. **ओं समानी वः आकृतिः समाना हृदयानि वः।**
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

अर्थ – तुम सबका ध्येय समान ही हो। तुम सबके हृदय समान हों। तुम सबका मन समान हो जिससे तुम सबका व्यवहार समान होवे।

ओइम्

(1) अग्नि मीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधानतमम् ।।1 ।।

अर्थः– सृस्टि यज्ञ से पूर्वविद्यमान प्रकाशक ऋतु के अनुसार संचालन व धरण करने वाले इसे अपने आश्रय में लेने वाले सभी रमणीय पदार्थो के धारणकर्ता प्रकाश स्वरूप परमात्मा की स्तुति करता हूँ।

(2) ओइम् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ।।

अर्थः– सबका आनन्द देने वाले सर्वव्यापक, परमात्मा, आनन्द के लिए और पूर्ण रक्षा के लिए हम पर कल्याण करें , और हम पर सुख शान्ति की चारो ओर से वर्षा करें।

(3) ईशा वास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्येक्तेन भुज्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्वनम् ।।2 ।।

अर्थः– अखिल ब्राहमाण्ड में जो कुछ भी जड़-चेतन स्वरूप जगत है। यह सब परमात्मा में व्याप्त है । उस परमात्मा के दिये पदार्थो का त्याग पूर्वक भोग करो और उसका लालच मत करो । क्योंकि यह धन (पदार्थ) किसी का नहीं है।

(4) ओइम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तयामामद्य मेधायाग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा ।।

अर्थः – हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर! विद्वान और ज्ञानवृद्व पितरजन जिस उतम विचारों को धारण करने वाली बुद्वि की उपासना करते हैं। उस मेधा बुद्वि से मुझे मेधा बुद्वि वाला बनाएं। मैं अपने आप को अर्पित करता हूँ।

(5) ओइम् पूर्णमदः पूणमिदं पूर्णात् पूर्णमूदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा शिष्यते।।

अर्थ :– वह परमात्मा सर्वदा पूर्ण है यह जगत भी पूर्ण है क्योंकि उस पूर्ण परमात्मा से ही यह पूर्ण जगत उत्पन्न हुआ है। पूर्ण परमात्मा में से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बचा रहता है ।